चित्रः तेजी ग्रोवर

रस-भरे फूलों के रंग

तेजी ग्रोवर

जासौन का फूल या फिर गुड़हल या गुल्हड़। पूजा का सुन्दर लाल फूल और बन्दरों का प्रिय आहार। अभी कुछ दिन पहले दो-तीन लँगूरों ने हमारे घर के पास वाले जड़ी-बूटी उद्यान में खूब मौज़-मस्ती की। सब-के-सब जासौन उनके पेट में उतर गए। कुछ दिनों बाद जब फूल दोबारा दिखने लगे तो मैं समझ गई कि लंगूरों को निकाल दिया गया है।

तितलियाँ और शकरखोरे भी इस फूल को बहुत चाहते हैं। मधुमक्खियाँ भी जासौन के रस का मज़ा लेती हैं। इसलिए मैं ताज़े फूलों से रंग नहीं बनाती। मैं गिरे हुए फूलों को चुनती हूँ। होशंगाबाद में मेरे सभी पड़ोसी देवी की पूजा फूलों से करते हैं। फिर वे गेंदे, गुलाब, चाँदनी और जासौन को नदी में सिरा देते हैं। लेकिन अब ये सब-के -सब फूल पूजा के बाद मुझे मिल जाते हैं।

मुझे जासौन का रंग कैसे मिला, जानते हैं? मैंने एक दिन कोई बीस-पच्चीस जासौन के फूलों में नींबू का रस डाला। फिर उन्हें थोड़े से पुदीने और ज़रा-सी फिटकरी के साथ उबाल लिया। नींबू और पुदीने से रंग गाढ़ा होता है, और फिटकरी से पक्का। जासौन से मैंने कई चित्र बनाए। उनमें से एक वो ऊपर कोने में है।

इस बीच भोपाल की एक चित्रकार संजू जैन ने अपना काफी काम प्राकृतिक रंगों से ही किया है। खासतौर से अनार के छिलके और हल्दी के रंगों से संजू ने बहुत से चित्र बनाए हैं। कैनवास पर हल्दी-मिली मुल्तानी मिट्टी और पुराने कागज़ों से बने कागज़ को चिपकाकर और अनार के छिलके के कई रंग बनाकर संजू ने बहुत सुन्दर चित्र बनाए हैं। उनका यह चित्र खास चकमक के लिए है।

चित्रः संजू जैन